सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली | श्री साई शके : २९-३०
अंक - १०० | नवम्बर - २०१०

ॐ

ॐ श्री साईनाथाय नमः
ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः

दसरा (दशहरा)

श्री साई शके - २९

आज दशहरा मतलब श्री साई शके २९ का शुभारम्भ। श्री शक्तिपीठ स्थापना को २८ वर्ष पूरे होकर २९ वाँ वर्ष आरम्भ हुआ। अर्थात हमारे जैसे सामान्य मानवों को पारमार्थिक उच्चावस्था प्राप्त कर, विश्वशांति का निर्माण करने वाले कार्य की सम्पूर्ण सिद्धता को और उसके लिए आवश्यक ब्रह्माण्ड शक्ति को आह्वान करके उसे शक्तिपीठ में स्थापित कर, आज २८ वर्ष पूर्ण हुए। हम सब गुरुभक्त पिछले कुछ समय से इस कार्य का लाभ ले रहे हैं, लेकिन हमें गुरुभक्त हुए जो कुछ वक्त हुआ, उस वक्त में हमने गुरुभक्ति या गुरुसेवा कितनी की, इसका अंदाजा लेना आज आावश्यक है। विचार किया तो ऐसा बोध होगा कि इतने साल श्री गुरु ने ही हमारी सेवा की और वे आज भी कर रहे हैं। फिर हम गुरुभक्त हुए भी गुरु से सेवा लेने के लिए या गुरुसेवा करने के लिए? गुरुसेवा का मतलब गुरुशक्ति की सेवा। बहुतांशी रूप में हम इस कार्य का लाभ लेने आए, वह हमारे जीवन की कठिनाइयाँ/ संकट निवारण करने के लिए, लेकिन श्री गुरु ने हमारे अंजाने में गुरुशक्ति का बीज अर्थात गुरुकृपाशिर्वाद हममें धारण कर दिया। हमें 'उपासना' शब्द का सही अर्थ समझाया और समाधान की प्राप्ती कर हम अपना जीवन व्यतीत करने लगे। यह गुरुभक्ति या गुरुसेवा हुई क्या? यह बताते समय दादाजी ने ऐसा उदाहरण दिया था कि, हम सब जब इस कार्य में आए तब हमें गुरुकृपाशिर्वाद दिया गया, मतलब ऐसे समझें कि हमें एक किलो का सोने का गोला दिया। इससे हमें समाधान

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
Dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-World.com

Parton
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Suscription
Inland
Yearly : Rs.100.00
Life time : Rs.500.00

Overseas
Yearly : US$ 50.00
Life time : US$ 200.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

मिला और हम आत्मविश्वास से जीने लगे। ऐसा विश्वास निर्मित हुआ कि जब जीवन में कोई भी संकट आया तो हमारे पास गुरुकृपाशिर्वाद है, मतलब एक किलो का सोने का गोला है, जिसकी मदद से आई हुई कठिनाइयों को हम पार कर लेंगे। लेकिन इस प्रकार से वह एक किलो का सोने का गोला गले में लटकाकर घूमते समय न उस सोने की शोभा आई, न ही हममें शोभा आई। फिर उसे शोभा कब आएगी? तब जब उसे आकार देकर उसका अलंकार होगा तब। मतलब प्राप्त हुए कृपाशिर्वाद को जब हमारे काया-वाचा-मन को आकार मिलेगा तभी वह गुरुबीज अर्थात प्रत्यक्ष ब्रह्म हमारे माध्यम से कार्यान्वित होगा और तभी सही मायने में गुरुभक्ति मतलब गुरुशक्ति की भक्ति/सेवा होगी। वं. दीपक भाई की तरह आज जो सेवक हमें वंदनीय या गुरुस्वरूप लगते हैं, वह भी हमारे जैसे कोई कठिनाईयाँ निवारण करने के लिए ही गुरुमार्ग में आये, लेकिन मिले हुए कृपाशिर्वाद से उन्होंने अलंकार किया, हम सभी से भी श्री गुरू को यही अपेक्षा है। उनको Followers नहीं चाहिये, कि जिसमें एक के पीछे एक सब चलते रहते हैं लेकिन आगे चलने वाले को ये नहीं पता रहता है कि वह कहाँ जा रहा है और पिछे वाले को भी यह पता नहीं रहता कि आगे का व्यक्ति किधर जा रहा है। वं. दादाजी को तो Fellow men चाहिए, जो हाथ में हाथ पकड़ कर एक निश्चित ध्येय की ओर बढ़ रहे है; फिर वह कम संख्या में होंगे तो भी चलेगा लेकिन गुरुशक्ति कार्यान्वित करने के लिए तैयार होने चाहिए। वं. दादाजी को यह विश्वास है कि हम सब आने वाले जगत के आधार स्तम्भ हैं और हमारे माध्यम से विश्व शांति निर्मित होगी। उसी के लिए तो उन्होंने शक्तिपीठ की स्थापना की और श्री साई शक का शुभारम्भ किया है। इसलिए हमें प्रयत्न करना भी आवश्यक है।

गुरुशक्ति हमारे माध्यम से कार्यान्वित करने की सिद्धना वं. दादा जी ने निराकरण पद्धति, आरती साधना, ऊँकार साधना और मुलाकात साधना इनमें करके दी है। हमारे प्रयत्न मतलब इन सभी साधनाओं का लाभ लेना और श्री गुरु पर दृढ़ विश्वास रखकर इस कार्य के अनुरुप परमार्थ प्रश्नावली में बनाए अनुसार अपना दैनंदीन आचरण रखना; कि जिससे, 'संस्था सेवक दिखे; मतलब सबसे निराला या विचित्र नहीं; तो मतलब सभी को जो गले मिलने जैसा लगे या सभी का चहेता। ऐसे होने के लिए हमारे माध्यम से गुरुशक्ति प्रवाहीत होनी चाहिए। उसके लिए प्रमुख माध्यम मतलब 'शब्दब्रह्म' जो वं. दादाजी ने श्री पंतमहाराज जी से प्राप्त कर लिया और उसकी सिद्धता सभी साधनाओं में की है।

हमें अपना विकास करते समय, अपना अन्नमय कोश प्रधान जीवन उसके सूक्ष्म रूप में विलिन करना मतलब आनन्दमयकोश प्रधान करना आवश्यक है। हमारे शरीर में अन्नमय कोश कहा है? तो उसका वास्तव्य नाभी स्थान या पेट में हुआ तो भी उसका प्रभाव शरीर की सभी पेशीओं पर होता है। मतलब शरीर की सभी पेशीओं से हमें अन्न मिलता रहता है; कुछ स्पर्श माध्यम से, आँखों से हम जो देखते है वह, कानों से जो सुनते है वह, मुहँ से जो खाते है वह, या नाक से जो सूंघते है वह। इन सभी पेशीकाओं से सिर्फ क्षणिक सुख प्राप्त करने के लिए हम अपना जीवन व्यतीत करते रहते हैं। इसी का मतलब है कि हम अन्नमयकोश प्रधान जीवन जीते रहते हैं ऐसे जीते समय शरीर की यह सब पेशीयाँ प्रमुख रूप से कर्मेंद्रीयों का काम करती है, मतलब ज्यादा से ज्यादा सुख प्राप्ती के लिए कर्म करते रहना।

इस प्रकार का जीवन जीते समय आत्मिक शक्ति से मतलब देवदैविक या गुरुशक्ति के अभाव से यह सर्व पेशीयाँ अविकसित अवस्था में रहती है, जिससे सहवास में आए हुए किसी भी विषय

की धारणा, आत्मिक शक्ति के अभाव से, पूरी तरह नहीं हो सकती। जिस वजह से इन पेशीओं में उस विषय के बारे में जो स्पंदन बुद्धी की ओर जाते है उसमें भी अपूर्णत्व होता है और उसी की वजह से बुद्धी माध्यम से विचार के बदले विकार प्रकट होता है।

।। विकार मतलब अपूर्ण विचार।।

आधा पका हुआ मिठा आम अगर विचार है तो उसका अपूर्णत्व मतलब कच्चा आम या खराब हुआ आम यह विकार होता है। तो शरीर के पेशीओं के अविकसित अवस्था के कारण साधारणतः विकार प्रकट होते रहते है। हमारे माध्यम से भी यह होता रहता है। एक साधारण उदाहरण मतलब खाना पेटभर खाने के बाद हम बाहर गए और हमारी मनपसंद खाने की चीज अगर हमें दिखाई दी, तो बिना समझे हम वो खा जाते है और फिर उसका पश्चाताप करते रहते हैं।

ऐसा अन्नमय कोश प्रधान जीवन आनन्दमय कोश प्रधान कैसा होता है, तो, शरीर की यह सभी पेशीयाँ हमारे ब्रह्मस्थान से मतलब आनन्दमयकोश के स्थान से सम्बन्धित (linked) होती है। इसीलिए सभी संवेदना वह प्रथम ब्रह्मस्थान को मतलब अपने मस्तिष्क (Brain) को देती है। जब हम इस कार्य का लाभ लेते है तब आरती साधना, ॐकार साधना और मुलाकात साधना इन में से सिद्ध किया हुआ शब्दब्रह्म प्रकट होता रहता है। वह शब्दब्रह्म, मतलब इसके स्पंदन, प्रथम वातावरण के दूषित वलयों का नाश करते है और फिर वह अपने शरीर पर आधात करके शरीर की पेशीयों का विकास करने लगती है। जैसे जैसे आत्मिक शक्ती या गुरुशक्ति का प्रमाण इन पेशीयों में बढ़ता है वैसे वैसे पेशीयों की धारण शक्ति भी बढ़ती जाती है। उससे सान्निध्य में आए हुए विषयों की धारण पूर्णरूप से होकर, वह पेशी, विषय के बारे में सम्पूर्णरूप से सभी संवेदना बुद्धि माध्यम को देती है मतलब इस बार वह पहले ज्ञानेंद्रियों का काम करती है और उसी वजह से वह संवेदना बुद्धी माध्यम से प्रकट होते समय विकार रूप में न होकर विचार रूप में होती है। ऐसा विचार हमें और बाकी जगत की उन्नती के लिए हमेशा हितकारक ही होता है। जिस प्रकार हमारा यह विकास होता है उसी प्रकार जगत के सभी लोगों का विकास अपने या उनके अंजाने में होता जाएगा, कि जिससे इस प्रकार प्रकट होने वाले विचारों से विश्वशांति होगी। इसीलिए कार्य केन्द्र पर होने वाली आरती साधना, अनुष्ठान और मुलाकात साधना अति महत्वपूर्ण है। उसी प्रकार वार्षिक साधना सम्मेलन का महत्व भी अनन्य साधारण होता है।

इस प्रकार विकास होते समय आगे इस शब्दब्रह्म का आघात होते होते शरीर की पेशीयों को स्पर्शब्रह्म की प्राप्ती होती है इस स्पर्श ब्रह्म से वातावरण के आवश्यक विषयों का ज्ञान वायु तत्व से, स्पर्श माध्यम से होता है। इसी स्पर्श माध्यम से कामकाज करने वाला सेवक हमें अपनी किसी दूर की चीज के बारे में, जैसे गाँव के घर का नक्षा इत्यादि का ज्ञान देता है। और इसी स्पर्श ब्रह्म के माध्यम से शरीर की सभी विकसित पेशीयों से गुरुशक्ति वातावरण में सहजता से प्रवाहित होती है और मानव कल्याण करती है। वं. दादाजी के बताए अनुसार यह गुरुमार्ग, मानव कल्याण का ऐसा कार्य है कि इससे, जो मानव जनम लेकर गए वे, जो मानव जगत में जी रहे हैं वे और जो आगे जनम को आने वाले है वे, इन सभी मानवों का कल्याण करने वाला है। यह गुरुकार्य उनको इन सभी के माध्यम से कर लेना है। यह गुरुसेवा मतलब गुरुशक्ति की सेवा कब होगी? तो जब हमारे माध्यम से शब्दब्रह्म प्रकट होगा तब। ऐसी सेवा शुरू हुई तो

सेवक अवस्था की प्राप्ती हुई। यह अवस्था वं. दादा और परम् पूज्यनिय श्री साईबाबा इनकी कृपा से हम सभी को जल्द से जल्द प्राप्त हो और उन्हें अपेक्षित गुरुसेवा वे हम सभी के माध्यम से करके ले, यही उनके चरण कमलों में विनम्र प्रार्थना।

।। शुभं भवतु।।

जन्म जन्म का सेवक

सोचा था तेरी ब़ज्म शमाँ बन के जगमगायेंगे
ताप ने तेरे मगर परवाना बना डाला।

ख्वाहिशें थीं बनके खुशबू गुलशन में फैल जायें
जलवों ने तेरे हमको तो दीवाना बना डाला।

मिटती न थी यह मैं मेरी मैखाने में आकर
तेरे नशे ने मैकश से हमें पैमाना बना डाला।

निकले थे कश्ती में कागज़ की इस सफर पे
नाखुदा मिला ऐसा कि किनारा दिखा डाला।

जामा जो कर्म फलों का रुह ने डाला था
गुरु वलय ने सब खताओं को एक पल में मिटा डाला।

काम सब तन्मय हो श्रद्धा सबूरी से करो
उसने तो तुम जैसे ज़र्रे को भी शिवाला बना डाला।

रवि का, आज्ञाकारी शरण

सभी गुरुबंधु, भगिनियों एवं पाठकों को
दिपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

साईकल्प आध्यात्म संस्था, नईदिल्ली

–सेवक बाबूजी

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई-मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26955261

E-mail : saikalp@gmail.com Dadab6@mail.com